Course – BA Education Hons. part III
Paper – VI (Educational Guidance & curriculum Construction.
Topic – Type of Counselling
prepared by – Dr. sangeeta Kumari

इकाई 5 : परामर्श के प्रकार
Unit 5 : Types of Counselling

5.1 परामर्श की अवधारणा (Concept of Counselling)

परामर्श में प्रार्थी की समस्या व्यक्तिगत होती है। मानसिक रूप से प्रार्थी स्वस्थ नहीं होता है। इसीलिए वह निर्णय लेने में समर्थ नहीं होता है, उसे परामर्श की आवश्यकता होती है। परामर्श एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें साक्षात्कार के माध्यम से दो व्यक्तियों के मध्य विचार विमर्श होता है। दोनों ही, अर्थात् परामर्शदाता एवं परामर्शप्रार्थी के मध्य सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित होना इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने की प्राथमिक आवश्यकता है। इस पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित विचार-विमर्श का उद्देश्य परामर्शप्रार्थी को इस योग्य बनाना है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सके। इस प्रकार मानवीय सम्बन्ध एवं सहायता और वह सहायता भी प्रत्यक्ष रूप में आमने सामने प्रदान करना, परामर्श के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

5.2 परामर्श के प्रकार (Types of Counselling) :–

एक युग था जब परामर्श की औपचारिक प्रक्रिया के अभाव में ही परामर्श का कार्य सम्पन्न किया जाता था। मानवीय सम्बन्ध के आधार पर किसी को कुछ सुझाव दे देना ही परामर्श समझा जाता था। परन्तु सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक जटिलताओं की निरन्तर वृद्धि ने विश्व के बुद्धिजीवी समुदाय को इस तथ्य का अनुभव करा दिया कि व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के अस्तित्व को यदि सुरक्षित रखना है, यदि समस्त दिशाओं में सतत् एवं

समन्वित प्रगति करती है तो व्यक्ति के प्रगति एवं विकास पथ पर आनेवाली समस्याओं का समाधान प्रभावी रूप से किया जाना चाहिए और इसके लिए शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श की प्रक्रियाओं को समुचित महत्व प्रदान किया जाना चाहिए। इस अनुभूति के फलस्वरूप ही परामर्श की प्रक्रिया का विकास किया गया। आज अनेको क्षेत्र में, विभिन्न पक्षों को दृष्टिगत रखकर, परामर्श के विभिन्न रूपों का उपयोग किया जा सकता है।

उद्देश्य क्षेत्र आदि के आधार पर परामर्श के निम्नलिखित प्रकार हैं:-

(1) मनोवैज्ञानिक परामर्श (Psychological Counselling
(2) मनोचिकित्सात्मक परामर्श (Psycho therapeutic Counselling)
(3) नैदानिक परामर्श (Clinical Counselling
(4) वैवाहिक परामर्श (Marriage Counselling
(5) व्यावसायिक परामर्श (Vocational Counselling)
(6) छात्र परामर्श (Student Counselling
(7) स्थापन परामर्श (Placement Counselling)

स्वरूप के आधार पर परामर्श मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं:-

(1) निदेशात्मक परामर्श (Directive Counselling)
(2) अनिदेशात्मक परामर्श (Non-directive Counselling)
(3) समाहारक परामर्श (Elective Counselling)

Scanned with CamScanner

5.3 निदेशात्मक परामर्श (Directive Counselling) :-

निदेशात्मक परामर्श की विधि परम्परागत एवं अत्यन्त प्रचलित है। निदेशात्मक परामर्श के अन्तर्गत, परामर्श का मुख्य उत्तरदायित्व विशिष्ट रूप से प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति का होता है जिसे परामर्शदाता कहा जाता है। परामर्शदाता, उपबोध्य को स्वयं की राय से परिचित कराता है और सेवार्थी को वांछनीय दिशा की ओर अग्रसरित करने हेतु सुझाव भी देता है।

निदेशात्मक परामर्श के सोपान (Steps in Directive Counselling)

विलियमसन ने निदेशात्मक उपबोधन के निम्नलिखित छः सोपान दिए हैं :-

(1) **विश्लेषण (Analysis) :-**

विश्लेषण के अन्तर्गत उपबोध्य के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने के लिए अनेक स्रोतों द्वारा आधार सामग्री एकत्र की जाती है।

(2) **संश्लेषण (Synthesis) :-**

संकलित आधार सामग्रियों को क्रमबद्ध व्यवस्थित एवं संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। जिससे सेवार्थी के गुणों, न्यूनताओं, समायोजन एवं कुसमायोजन की स्थितियों का पता लगाया जा सके।

(3) **निदान (Diagnosis) :-**

निदान के अन्तर्गत सेवार्थी द्वारा अभिव्यक्त समस्या के कारण तत्वों तथा उनकी प्रकृति के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

(4) **पूर्व अनुमान (Prognosis) :-**

इसमें छात्रों की समस्या के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जाती है।

Scanned with CamScanner

(5) परामर्श (Counselling) :-

पंचम सोपान में, परामर्शदाता सेवार्थी के समायोजन तथा पुनः समायोजन के बारे में वांछनीय प्रयास करता है।

(6) अनुगामी (Follow up) :

इसमें उपबोध्य की नयी समस्याओं के पुनः घटित होने की सम्भावनाओं से निपटने में सहायता की जाती है और सेवार्थी को प्रदान किए गए परामर्श की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है।

निदेशात्मक परामर्श की विशेषताएँ (Characteristics of Directive counselling)

(1) परामर्शदाता का कर्तव्य, अपने निदान के अनुरूप निर्णय लेने में उपबोध्य की सहायता करना होता है।

(2) परामर्शदाता प्रार्थी को आवश्यक सूचनाओं से परिचित कराता है, सेवार्थी की परिस्थिति, वस्तुनिष्ठ वर्णन व अर्थापन करता है तथा उसे विवेकयुक्त उपबोधन प्रदान करता है।

(3) निदेशात्मक परामर्श में; सेवार्थी के बौद्धिक पक्ष पर बल दिया जाता है।

(4) इस प्रकार के उपबोधन के अन्तर्गत, सेवार्थी की अपेक्षा उसकी 'समस्या' पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

(5) परामर्शदाता के निर्देशन के अनुसार ही उपबोध्य को कार्य करना होता है।

निदेशात्मक परामर्श की सीमाएँ (Limitations of Directive Counselling)

कॉर्ल रोजर्स का यह कहना है कि निदेशात्मक परामर्श की प्रक्रिया के अन्तर्गत उपबोध्य से अलग व्यक्ति द्वारा समस्या का निदान करने, समस्या के बारे में सुझाव देने और सेवार्थी की परिस्थिति का वर्णन करने का

Scanned with CamScanner

यह परिणाम होता है कि वह अनावश्यक रूप से, दूसरे व्यक्ति पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति को प्रदर्शित करने लगता है तथा स्वयं की समायोजन की समस्याओं का समाधान करने में वह आत्म विश्वास का अभाव अनुभव करता है।

5.4 अनिदेशात्मक परामर्श (Non-directive Counselling)

अनिदेशात्मक परामर्श सेवार्थी केन्द्रित होता है। इस प्रकार के परामर्श द्वारा व्यक्ति को बिना किसी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष निर्देशन के आत्म-निर्भरता, आत्म-साक्षात्कार एवं आत्मानुभूति की ओर उन्मुख किया जाता है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करने का श्रेय कार्ल रोजर्स को जाता है।

अनिदेशात्मक परामर्श के सोपान (Steps in non-directive counselling)

(1) वार्तालाप (Conversation) :- प्रथम सोपान में, परामर्शदाता तथा उपबोध्य के बीच अनेक बैठकों में अनौपचारिक रूप से विभिन्न विषयों पर बातचीत होती है। अनेक बार वे दोनों बिना उद्देश्य के भी मिलते हैं। लेकिन प्रथम सोपान का मुख्य उद्देश्य है - परस्पर सौहार्द की स्थापना करना जिससे उपबोध्य निःसंकोच रूप से अपनी बात को कहने हेतु मानसिक रूप से तैयार हो सके। उपबोधक द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि वह उपबोध्य के साथ मित्र के समान सम्बन्ध स्थापित कर ले और उसके समक्ष ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दे कि मित्र-चिकित्सा की पद्धति को प्रयुक्त किया जा सके।

(2) जाँच-पड़ताल (Probing) :- उपबोध्य की वैयक्तिक समस्या, परिस्थिति एवं सन्दर्भों के सम्बन्ध में, सविस्तार जाँच-पड़ताल की व्यवस्था इस सोपान के अन्तर्गत की

Scanned with CamScanner

की जाती है।

(3) संवेगात्मक अभिव्यक्ति (Emotional Release):-
उपबोध्य की व्यवस्थाओं, भावनाओं तथा मानसिक तनावों को अभिव्यक्त करने हेतु उसे अवसर प्रदान करना ही, इस सोपान का मुख्य उद्देश्य है।

(4) परोक्ष रूप से प्रदान किए गए सुझावों पर चर्चा (Discussion on Indirectly given suggestions)
इस सोपान में उपबोध्य, परामर्शदाता द्वारा दिए गए सुझावों को एक आलोचनात्मक दृष्टि से देखता है।

(5) योजना का प्रतिपादन (Project Formulation):-
इसमें परामर्शदाता को स्वयं की समस्या का हल प्राप्त करने हेतु एक वास्तविक योजना का निर्माण करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस योजना के स्वरूप, प्रभाव इत्यादि के सम्बन्ध में दोनों विचार विमर्श करते हैं।

(6) योजना का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन (Implementation and Evaluation of Project)
अन्तिम सोपान के अन्तर्गत, उपबोध्य द्वारा बनाई गई योजना को क्रियान्वित किया जाता है तथा उसकी प्रभावशीलता ज्ञात करने के लिए अन्त मूल्यांकन की भी व्यवस्था भी इस सोपान में की जाती है।

अनिदेशात्मक परामर्श की प्रमुख विशेषताएँ (Characteristics of Non-directive Counselling.

(1) इसके अन्तर्गत सेवार्थी को अपनी समस्या का हल खोजने हेतु प्रेरित किया जाता है।

(2) इस उपबोधन में किसी भी प्रकार के निदानात्मक उपकरण अथवा परीक्षण का प्रयोग नहीं किया जाता है।

Scanned with CamScanner

3) सेवार्थी को स्वतन्त्र दृष्टिकोण अपनाने हेतु इस के अन्तर्गत अवसर प्रदान किया जाता है।

4) सेवार्थी के विकास तथा समायोजन की प्रक्रिया में उसकी सहायता करना ही इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

5) इस प्रकार के परामर्श में यथार्थता, संवेदनशीलता एवं स्वाभाविक का होना परम आवश्यक है।

अनिर्देशात्मक परामर्श की सीमाएँ (Limitations of Non-directive Counselling)

1) इस प्रकार के परामर्श को शिक्षालय तथा महाविद्यालयों की परिस्थितियों में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है।

2) इसके अन्तर्गत उपबोध्य की अपनी आवश्यकताओं एवं सुविधाओं के अनुसार समय देना पड़ता है, जिससे सम्पूर्ण परामर्श प्रक्रिया पूर्ण होने में अधिक समय लगता है।

3) वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि अनेक परिस्थितियों में कुछ छात्र स्वयं कोई कदम उठाने में संकोच करते हैं तथा कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जो परामर्शदाता के बगैर कुछ भी करने को तैयार नहीं होते हैं।

5.5 समाहारक परामर्श (Electic Counselling)

जो परामर्शदाता निर्देशात्मक या अनिर्देशात्मक विचारधाराओं से असहमत हैं उन्हें उपबोधन के एक अन्य प्रकार को विकसित किया है जिसे समाहारक परामर्श कहा जाता है। यह परामर्श दोनों उपबोधनों के मध्य का परामर्श है, इसे "मध्य मार्गीय" के नाम से भी जाना जाता है।

इसमें उपबोधक पूर्ण रूप से तटस्थ नहीं रहता है। इसमें परिस्थिति के अनुरूप उपबोधक तथा सेवार्थी के सम्बन्धों के मध्य कुछ पूर्व निश्चित दूरी निहित रहती है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन एफ० सी० थार्न ने किया।

Scanned with CamScanner

समाहारक परामर्श के सोपान (Steps in Electic Counselling)

इस परामर्श के सोपान निम्नलिखित हैं:—

(1) उपबोध्य की आवश्यकता तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन (study of the need and personality characteristics of the client)

प्रथम सोपान में परामर्शदाता यह प्रयास करता है कि उपबोध्य की वास्तविक आवश्यकता क्या है? सर्वप्रथम उसकी वास्तविक आवश्यकता तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी आवश्यकता ज्ञात की जाती है।

(2) प्रविधियों का चयन (selection of Techniques):—

इसके अन्तर्गत, उपबोध्य की आवश्यकता के अनुसार प्रविधियों का चयन कर, उनका उपयोग किया जाता है। द्वितीय सोपान की मुख्य विशेषता है—परामर्श की प्रविधियों को व्यक्ति की आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के अनुकूल प्रयुक्त करने का प्रयास करना।

(3) प्रविधियों का प्रयोग (Application of Technique)

चयनित प्रविधियों को विशिष्ट परिस्थिति में प्रयुक्त किया जाता है। जिन प्रविधियों का चयन किया जाता है उनकी उपयोगिता उपबोध्य की परिस्थिति के अनुसार ही देखी जाती है।

(4) प्रभावशीलता का मूल्यांकन (Evaluation of effectiveness)

चतुर्थ सोपान के अन्तर्गत प्रविधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है।

(5) परामर्श की तैयारी (Preparation of the counselling):—

उपबोध्य को यथोचित परामर्श तथा पथ-प्रदर्शन हेतु वांछनीय तैयारी इस सोपान में की जाती है।

(6) उपबोध्य तथा अन्य संबंधित व्यक्तियों की राय प्राप्त करना:— (~~selecting~~ seeking the opinion of the client and other related people

परामर्श के कार्यक्रम एवं अन्य

अन्य आवश्यक उद्देश्य एवं विषयों पर उपबोध्य एवं उससे सम्बद्ध अन्य ~~अन्य~~ व्यक्तियों की राय को जाना जाता है।

समाहारक परामर्श की विशेषताएँ (Characteristics of Electic Counselling)

(1) इसमें सामान्यतः वस्तुनिष्ठ एवं समन्वयपरक विधियों का प्रयोग किया जाता है।

(2) परामर्श की विधि का प्रयोग करते समय अल्पव्यय के सिद्धान्त को ध्यान में रखा जाता है।

(3) परामर्श के प्रारम्भ में सामान्यतः उन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें उपबोध्य की भूमिका सक्रिय होती है तथा परामर्शदाता की भूमिका निष्क्रिय।

(4) समस्त विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग करने हेतु परामर्शदाता में अपेक्षित व्यावसायिक दक्षता व कुशलता होना आवश्यक है।

(5) इसके अन्तर्गत, उपबोध्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही, निर्देशात्मक तथा अनिर्देशात्मक विधियों को प्रयुक्त करने का निर्णय लिया जाता है।

(6) समस्त उपबोध्य को अपेक्षित अवसर उपलब्ध कराने पर बल दिया जाता है, जिससे वे स्वयं की पहल के अनुसार, समस्याओं का समाधान स्वयं खोज सके।

समाहारक परामर्श की सीमाएँ (Limitations of Electic Counselling)

समाहारक परामर्श की युक्तियाँ एवं नीतियाँ सामान्यतः अवसरवादी एवं अस्पष्ट होती हैं। कुछ विद्वानों का यह कहना कि परामर्श के अन्तर्गत समाहारक आयाम असम्भव है, क्योंकि निर्देशात्मक तथा अनिर्देशात्मक विधियों को यथार्थ में समन्वित कर पाना अत्यन्त कठिन होता है क्योंकि यह परस्पर विरोधी आयाम है।

Scanned with CamScanner

5.6 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1. Define Counselling. Describe the Directive Counselling.
परामर्श को परिभाषित कीजिए। निर्देशात्मक परामर्श का वर्णन कीजिए।

Q2. Describe the Non-directive Counselling.
अनिर्देशात्मक परामर्श का वर्णन कीजिए।

Q3. Describe the Electic Counselling.
समाहारक परामर्श का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner